IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

निर्मला पुतुल की कविताओं में चित्रित आदिवासी समस्याएं

जयश्री प्रकाश खाडे[1], डॉ. सुनील बापू बनसोडे[2]
शोध छात्रा[1], प्रोफेसर, हिंदी विभाग[2],
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर[1]
तुळजाराम चतुरचंद कॉलेज, बारामती[2]
jayashreekhade1996@gmail.com[1], sunilbansode16gmail.com2

शोध सारांश : *21 सी सदी यह विमर्शों की सदी रही है। जिसमें प्रमुख रूप से दलित विमर्श, स्त्री विमर्श आदिवासी विमर्श है 21वीं सदी में ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में देश प्रगति कर रहा है, वही दूर जंगलों में बैठा आदिवासी इन सब से वंचित दिखाई देता है। देश का मूल निवासी होकर भी विकास के हर क्षेत्र में पीछे है। आजादी के इतने वर्षों बाद भी आदिवासियों का जीवन उपेक्षित और हाशिए पर है। इसका कारण है शिक्षा। अशिक्षित होने के कारण उनका विकास नहीं हो पाया। शिक्षा से वंचित होने के कारण उनकी कल्पना एवं यथार्थ को लिखित रूप न दे सके, ना तो साहित्य में है, ना ही इतिहास में। आदिवासी साहित्य परंपरा को हम लोकगीत, किंवदंतियां, लोक कथा तथा मिथकों के माध्यम से समझ सकते हैं। इनमें उनकी परंपरा इतिहास और गौरवशाली शौर्य गाथा का परिचय मिलता है।*
प्रस्तुत शोध निबंध का उद्देश्य निर्मला पुतुल की कविताओं में व्याप्त आदिवासी समुदाय की समस्याओं को उजागर करना है। निर्मला पुतुल हिंदी साहित्य की सुप्रसिद्ध कवित्री है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से आदिवासी समुदाय की समस्याओं को पाठकों के समक्ष रखने का प्रयास किया है तथा आदिवासी समुदाय की समस्याओं का विवेचन किया है।

बीज शब्द – निर्मला पुतुल, कविता, आदिवासी, जल-जंगल-जमीन, विस्थापन,,शोषण और उत्पीड़न, गरीबी और अभाव, अशिक्षा, स्त्री-पीड़ा / आदिवासी नारी की स्थिति, प्राकृतिक संसाधन, सामाजिक असमानता, आदि।

प्रस्तावना

वर्तमान युग के हिंदी साहित्य में आदिवासी साहित्य अपनी एक विशेष पहचान बनाते हुए नजर आता है। निर्मल जी आदिवासी महिला साहित्य जगत की सशक्त रचनाकार है। वह साहित्य लिखने के साथ-साथ सामाजिक विकास, मानवाधिकार शिक्षा, आदिवासी महिलाओं के समग्र उत्थान के लिए व्यक्तिगत सामूहिक एवं संस्थागत स्तर पर सतत् सक्रिय है।
निर्मला पुतुल जी का जन्म 6 मार्च 1972 में कुरवां, दुमका (झारखंड) में हुआ। इनके अब तक तीन कविता संग्रह प्रकाशित हुए है। निर्मला पुतुल की कविताएं अपनी जमीन से जुड़ी हुई है। उनकी कविताओं में आदिवासी जनजीवन का एक जीवंत दस्तावेज मिलता है, जो पाठकों के दिल को छू जाता है। निर्मला पुतुल ने अपनी कविताओं में आदिवासी समुदाय की समस्या को अत्यंत सूक्ष्मता से देखा है। निर्मला पुतुल ने अपनी कविता के माध्यम से शोषण, विस्थापन, अंधविश्वास, स्त्री की त्रासदी, मद्यपान से घिरा हुआ समाज, कुंवारी मां की समस्याओं का चित्रण समाज के समक्ष रखने का प्रयास किया है। निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी समाज की समस्याओं का विवेचन निम्न प्रकार से किया गया है।

1. सामाजिक रीति रिवाज में जकड़ा स्त्री का निम्न दर्जा :

निर्मला पुतुल जिस समुदाय से आई है वह संथाल समुदाय है। निर्मला जी इसी मिट्टी में पली बड़ी है। वर्तमान युग में भी अंधविश्वास, पुरानी रीति रिवाज में उलझा हुआ समाज दिखाई देता है। इन समस्याओं से अवगत करने का कार्य निर्मला जी ने किया है। समाज में

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

अंधविश्वास के जरिए लोगों का शोषण किया जाता है। निर्मला जी अपने समाज के प्रति संवेदनशील नजर आती है।उन्होंने अपने समुदाय में व्याप्त कुरीतियों को सूक्ष्मता से पहचान कर अपनी काव्य रचना की है। संथाल समुदाय में कई भ्रांतियां अंधश्रद्धाएं हैं। सदियों से पल रही है। इस कारण संथाली जीवन को अहिस्ता – अहिस्ता ध्वस्त कर रही है। संथाल समाज मे कुछ कार्य कलाप वर्जित माने जाते है। जो बाते समाज पंचायत ने वर्जित मानी है, उन्हे करना अपराध माना जाता है। संथाली समाज में महिलाओं को निम्न दर्जा दिया जाता है। समाज की महिला हल को छू नही सकती अगर उसने हल को छू लिया, तो उसे दंडित किया जाता है। इतना ही नही तो, तीर–धनुष चुना भी संथाल महिलाओं के लिए वर्जित है। जैसे –

"बस ! बस !! रहने दो! / कुछ मत कहो सजनी किस्कू/मैं जानती हूं सब /
जानती हूं कि अपने गांव बेरोजगार की धरती पर/जब तुमने चलाया था हाल /
तब डबल उठा था/बस्ती के मांझी थान में बैठे देवता का सिंहासन/
गिर गई थी पुश्तैनी प्रधान कुर्सी पर/मगझहीन 'मांझी हाड़म' की पगड़ी/
पता है बस्ती की नाक बचाने खातिर/तब बैल बनाकर हाल में जाता था/
जालिमो ने तुम्हे/ खूंटे में बांधकर खिलाया था भूसा।"1

2. प्रथागत कानून :

संथाल समाज में महिला छप्पर छाने याने महिला अपने घर के छत पर नहीं चढ़ सकती। अगर वह छत पर चढ़ती तो उसका परिणाम बहुत बुरा होता। महिला के छत पर चढ़ने से अपशकुन माना जाता है। संथाल समाज में फैली कुरीतियां पनप रही है। निर्मला पुतुल जी ने प्रचलित प्रथागत कानून को अपनी कविताओं के माध्यम से उजागर किया है। प्रथागत कानून तोड़ने पर स्त्री को नंगा नचाया जाता है। डायन करार कर उन्हें दंडित किया जाता था। डायन करार याने उनके पति उस स्त्री से जानवरों जैसा सलूक करके , स्त्री का कान, नाक काट देते थे, और उसे घर से बाहर निकाल देते थे।

" घर चू रहा है तो चूने दो/छप्पर छानी मत चढ़ना / पहाड़पुर की प्यारी हेंब्रम की तरह/
तुम्हारा मरद भी करेगा तुमसे जानवराना बलात्कार/ और नाक कान काट धकिया निकल फेंकेगा घर से बाहर।"2

3. मद्यपान से घिरा समाज :

आदिवासी समाज में शराब पीने वालों की संख्या अधिक दिखाई देती है। आदिवासी समाज में सिर्फ पुरुष ही शराब नहीं पीते बल्कि महिला वर्ग भी शराब में धुत दिखाई देता है। शराब के लिए एक बस्ती का प्रधान किस हद तक गिर सकता है, इसका वर्णन 'चूड़का सोरेन से' इस कविता में किया है। एक बस्ती का प्रधान सिर्फ शराब की एक बोतल के लिए पूरा गांव गिरवी रखता है और गांव की लड़कियों के हाथ में कुछ पैसे थाम कर उन्हें भेज दिया करता है-

"कैसा बिकाऊ है तुम्हारे बस्ती का प्रधान जो सिर्फ
एक बोतल विदेशी दारू में रख देता है/ पूरे गांव को गिरवी/
और ले जाता है / कोई लड़कियों के गट्ठर की तरह/
लादकर अपनी गाड़ियों में / तुम्हारी बेटियों को हजार पांच सौ हथेलियां पर रखकर ।"3

4. विस्थापन की समस्या :

निर्मला पुतुल की कविताओं में विस्थापन की पीड़ा व्यक्त हुई है। वर्तमान युग में आदिवासी समाज के सामने सबसे बड़ा संकट विस्थापन का है। आदिवासी लोगों को रोजगार के लिए दर-दर भटकना पड़ता है। इस जगह से उसे जगह काम खत्म होते ही जगह बदल देनी पड़ती है। आदिवासियों को जंगल से काम खत्म होने के बाद, काम के लिए स्थान बदल देना होता है। दिल्ली आसम अधिक क्षेत्र में जाकर रोजगार ढूंढते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

विस्थापन के कारण आदिवासी लोगों की स्थिति दयनीय हो जाती है। विकास के नाम पर उन्हें ठगा जा रहा है। उन्हें अपने घरों से बेदखल कर वहां पर बड़े-बड़े मॉडल बनाए जा रहे हैं। उनके जख्मों पर केवल दिखावे के लिए मरहम लगाया जाता है, और उन्हें गुमराह कर नए-नए मॉडल बनाए जाते हैं। आदिवासी लोगों को अपने घरों से बेघर किया जाता है। निर्मला जी ऐसे मॉडल को ना करती है, जो उनके संसाधनों को छीन कर, उन्हें अपनी जमीन, जंगल में बेदखल करते हैं। इस तरह के विकास को कवयित्री भली भांति परिचित है। आदिवासी समाज के विकास के नाम पर होने वाला शोषण अन्याय का विरोध निर्मला जी करती है।

"चांद की तरह दिखाओगे तुम / विकास के मॉडल को/
उसके गधों और परजीवीपन की चर्चा/ तक ना होगी तुम्हारी बातों में/
जानती हूं तुम यह भी छुपाओगे की/ तुम इस विकास के मॉडल के पीछे /
किसका उर्वर मस्तिष्क कम कर रहा है/ छुपाओगे उन विकसित लोगों और/
देशों के विकास का राज /की किस तरह तुम्हारे माध्यम से/
हमारे संसाधनों को हमसे छीन कर /विकास उनसे शिखर तक पहुंचे वे।"4

5. कुंवारी माताओं की समस्या :

आदिवासी स्त्री के जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि, वह अपने आसपास के जन–समाज के लिए वह मात्र देह में तब्दील होती जा रही है। सेठ, साहूकार, सामंत, ठेकेदार, अधिकारी, समाज सेवक आदि आदिवासियों का सामाजिक एवं आर्थिक शोषण करते हैं। आदिवासी लड़कियों का नशे में धूत होकर यौन शोषण करते हैं। इस काम में गांव की मुखिया एक बोतल शराब के लिए लड़कियों को बेच देती है। इसी वजह से आदिवासी समाज में कुंवारी माता की समस्या नजर आती है।

बचाओ अपनी बहनों को / कुंवारी मां बनी पड़ोस की उस शीलवंती के मोहजाल से /
पूरी बस्ती को रिझाती जो/ बैग लटकाए जाती है बाजार/
खुद को बेचकर बाजार के हाथों ।"5

6. असुविधाओं की समस्या :

निर्मला जी अपनी कविता के माध्यम से आदिवासी जीवन की असुविधाओं की समस्या को उजागर करना चाहती है। गांव में सड़के नहीं है, बिजली नहीं है, बच्चे महाजन के पास गिरवी है, महिलाओं को कोसों दूर से झरने से पानी ढोकर लाना पड़ता है। आज हम डिजिटल दुनिया की बात करते हैं, यहां भारत के मूल निवासी अपनी मूलभूत सुविधाओं से वंचित दिखाई दे रहे हैं। निर्मला जी 'आपके शहर में, आपके बीच रहते, आपके लिए' शीर्षक कविता के माध्यम से इस समस्या को उजागर करती है।

"मैं बात करना चाहती हूं/अपने उसे गांव की/
जहां आज तक बिजली नहीं पहुंची/सड़के नहीं पहुंची/
औरत और जहां की महिलाएं/आज भी कोर्स भर दो झरनों से पानी ढोकर लाती है/
और जिनके बच्चे बंगाली के नाम पर/वर्षों से महाजन के पास गिरवी पड़े हैं।"6

निष्कर्ष

निर्मला पुतुल आदिवासी समाज की स्त्री लेखिका है। उनकी संवेदनाओं में व्यवस्था के प्रति कड़वाहट एवं आदिवासी स्त्री का संघर्ष दिखाई देता है। निर्मला जी ने अपने जीवन अनुभव को अपनी कविताओं के जरिए लोगों तक पहुंचाने का कार्य किया है। निर्मला जी ने आदिवासी लोगों के दुख, दर्द, समस्या को बहुत करीब से उसे देखा है।

निर्मला जी संथाल समाज की शिक्षा के प्रति उदासीनता, कुरीतियां और शराब की ओर बढ़ते समाज का झुकाव उनकी कविताओं में दिखाई देता है। शराब के खातिर बेटी और गांव को भी गिरवी रखने की बात निर्मला जी ने की है। आदिवासी समाज की असुविधाओं का वर्णन भी उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से किया है। आदिवासी लोग किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करते हैं, समाज में

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

पनपने वाली कुप्रथा, डायन करार देकर स्त्री को नंगा नचाया जाता है, इस प्रकार अनेक समस्याओं को उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से बताने का प्रयास किया है।

संदर्भ सूची

1. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजाते शब्द (कविता संग्रह), पृ.क्र. 23
2. वही, पृ.क्र. 23
3. वही, पृ.क्र. 21
4. निर्मला पुतुल, बेघर सपने (कविता संग्रह), पृ.क्र. 41
5. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजाते शब्द (कविता संग्रह), पृ.क्र. 21
6. निर्मला पुतुल, बेघर सपने (कविता संग्रह), पृ.क्र. 47